ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 3, May - June 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.028

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

मुगल–राजपूत संबंध
(राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

राजेश कुमार
सहायक आचार्य, इतिहास
राजकीय कन्या महाविद्यालय, सांडवा, (चूरू)

सारांश

यह शोध–पत्र राजस्थान में मुगल–राजपूत संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रकृति और प्रभाव का गहन विश्लेषण करता है। भारत के मध्यकालीन इतिहास में मुगल–राजपूत संबंधों ने एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जहाँ शक्ति संघर्ष, कूटनीतिक गठबंधन, विवाह–सम्बन्ध और सैन्य सहयोग की विविध छवियाँ देखने को मिलती हैं। विशेष रूप से अकबर के काल से प्रारम्भ होकर औरंगजेब तक का कालखंड इस संबंध की जटिलताओं और विविधताओं को प्रदर्शित करता है। अकबर की नीति "सुलह–ए–कुल" के अंतर्गत जोधपुर, आमेर, बीकानेर आदि के राजपूत शासकों के साथ मित्रता, वैवाहिक गठबंधन तथा प्रशासनिक साझेदारी की नींव रखी गई, जिससे मुगलों को एक सुदृढ़ साम्राज्य विस्तार में सहायता मिली, वहीं राजपूतों को भी राजनीतिक स्थायित्व एवं उच्च प्रशासनिक पद प्राप्त हुए। राजपूतों ने मुगल शासन में न केवल सैन्य सहयोग प्रदान किया, बल्कि कई राजपूत नरेशों ने मुगल दरबार में उच्च पदों पर कार्य करते हुए साम्राज्य के निर्णयों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि, यह संबंध सदैव स्थायी और समान रूप से लाभप्रद नहीं रहा। कई बार असहमति, असंतोष और संघर्ष की स्थितियाँ भी उत्पन्न हुईं विशेषकर महाराणा प्रताप जैसे स्वाभिमानी शासक मुगलों के समक्ष झुकने के बजाय स्वतंत्रता हेतु संघर्षरत रहे। औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों के चलते अनेक राजपूत राज्यों में असंतोष पनपा, जिससे यह संबंध धीरे–धीरे तनावपूर्ण होता गया। यह शोध–पत्र इन संबंधों के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सैन्य पहलुओं का समग्र मूल्यांकन करता है तथा यह स्पष्ट करता है कि मुगल–राजपूत संबंध केवल सामरिक नीति का परिणाम नहीं थे, अपितु भारत की विविधता में एकता की ऐतिहासिक मिसाल भी थे। शोध का उद्देश्य इन संबंधों की प्रकृति, कारण, प्रभाव और दीर्घकालिक परिणामों को उजागर करना है, ताकि भारतीय इतिहास में इस अध्याय की वास्तविक ऐतिहासिक भूमिका को स्पष्ट किया जा सके।

मूल शब्द – मुगल–राजपूत संबंध, सुलह–ए–कुल नीति, सैन्य सहयोग, मुगल कालीन राजस्थान

परिचय :

भारत में मुगल वंश का शासन 1526 ई. से प्रारम्भ होता है। जब पानीपत के प्रथम युद्ध में मुगल शासक बाबर ने दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराया। भारत में मुगल वंश का शासन 1526 ई. से 1857 ई. तक रहा। इस काल में सभी मुगल शासकों ने राजपूती रियासतों के भिन्न–भिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किये। बाबर एवं राणा–सांगा के मध्य वर्चस्व की लड़ाई थी तो अकबर सुलह–ए–कुल नीति एवं वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित कर राजपूती शासकों के साथ सम्बन्ध स्थापित किए। पहली रियासत आमेर थी जिसके शासक राव भारमल ने मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया। मुगल सम्राट जहॉगीर की मृत्यु के बाद जगत गुसाई का पुत्र शहजादा खुर्रम शाहजहॉ के नाम से मुगल बादशाह बना। शाहजहॉ के काल मे आमेर के महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह, जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह, बीकानेर के महाराजा करणी सिंह, उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने मुगलों का पूर्ण समर्थन एवं सहयोग दिया था। बूँदी राव क्षत्रुशाल की मृत्यु के बाद उनके छोटे पुत्र राव माधो सिंह को बूँदी को कोटा से अलग कर कोटा का स्वतंत्र राजा बना दिया।

अध्ययन के उद्देश्य :

- राजस्थान में मुगल–राजपूत संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना
- मुगल सम्राटों की राजपूत नीति की प्रकृति और उद्देश्यों का अध्ययन करना
- राजपूत राज्यों की भूमिका और सहभागिता को उजागर करना
- मुगल–राजपूत संबंधों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना

साहित्य समीक्षा :

1. **साहित्य समीक्षा गौरीशंकर ओझा (2018) –** की पुस्तक **"मेवाड़ राज्य का इतिहास"** एक ऐसी पुस्तक है जिसे मेवाड़ के सभी शासकों का विवरण नाम एवं क्रमवार दिया गया है। ये पुस्तक को मुगलकालीन नाम एवं क्रम के लिए सर्वाधिक प्रमाणिक माना जाता है।
2. **डॉ. गोपीनाथ शर्मा (2005)** : ''राजस्थान का इतिहास'' – इस पुस्तक मे लेखक ने राजस्थान के इतिहास का विस्तृत वर्णन करने का प्रयास किया है तथा साथ ही इस पुस्तक मे मुग़ल साम्राज्य एवं इसके विकास का भी विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।
3. **कर्नल जेम्स टोड (2014) :** ''राजस्थान का इतिहास भाग–2'' यह पुस्तक राजस्थान के इतिहास के संदर्भ मे लिखी गयी लेखक की दूसरी पुस्तक है। इस पुस्तक मे लेखक ने पिछले संस्करण को ही आगे बढ़ाते हुये राजस्थान के इतिहास का वर्णन ऐतिहासिक संदर्भ मे करने का प्रयास किया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो मुग़ल जो की उस समय का एक विशाल एवं वृहत साम्राज्य था, तथा यह एकमात्र ऐसा साम्राज्य था जिसने 150 वर्षो से भी अधिक समय तक भारत पर शासन किया । परन्तु सूक्ष्मता से देखने पर यह स्पष्ट होता है की सभी मुग़ल सम्राटों को देश के अन्य राज्यों को अपने अधीन करने एवं उन्हें विजय करने में इतनी अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी जितनी राजस्थान राज्य के राजाओं को अधीन करने में करनी पड़ी । साथ ही विशेषकर मेवाड़ के संदर्भ में देखा जाए तो यह पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता है की मुग़ल राजाओ ने इस रियासत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। चूँकि उस समय के राजस्थान को राजपूताने के नाम से जाना जाता था तथा इस की सभी रियासते विशेषकर मेवाड़ अपने स्वाभिमान के लिए जानी जाती थी। यदि दूसरे संदर्भ में देखा जाए तो एक सत्य यह भी निकलकर सामने आता है की मुग़ल साम्राज्य जो उस समय का अजेय साम्राज्य माना जाने लगा था, परन्तु उसे भी मेवाड़ में विद्रोह का सामना करना पड़ा था, तथा राणा प्रताप ने मुग़ल राजाओ की अधीनता जीवन पर्यन्त नहीं स्वीकारी।

मुग़ल साम्राज्य को यदि विश्लेषणात्मक दृश्टिकोण से देखे तो हम पाते है की समय समय पर शासन करने वाले विभिन्न मुग़ल राजाओ में से कुछ एक में निरंकुशता पायी जाती है, जिसमे औरंगजेब को उदाहरणतः लिया जा सकता है। परन्तु सभी मुग़ल सम्राट निरकुंश एवं अत्याचारी थे ऐसा कहना भी गलत होगा। उदाहरणतः यदि मुग़ल शासक अकबर के शासनकाल की तुलना इसके बाद के मुग़ल सम्राटों यथा जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब इत्यादि से करें तो ऐतिहासिक तथ्य बतातें है की अकबर की नीतियां समस्त समाजो के प्रति निरंकुशकारी ना होकर कल्याणकारी थी तथा अकबर के समस्त शासनकाल के दौरान कई बार ऐसा समय आया जब विभिन्न राजाओं ने उसकी कल्याणकारी नीतियों को देखकर सहर्ष उसके साथ संधि कर मुग़ल साम्राज्य के विस्तार में सहयोग किया।

राजस्थान में मुगल राजपूत सम्बन्ध :

राजस्थान के इतिहास मे मुगल राजपूत संबंध एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। भारत मे मुग़ल राजवंश की स्थापना मुग़ल बादशाह बाबर के द्वारा की गयी थी। एवं औरंगजेब के अंत के साथ ही मुग़ल साम्राज्य का अंत होना माना जाता है। परंतु भारत मे अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह जफर को माना जाता है जिसके नेतृत्व मे 1857 की क्रान्ति हुई। ऐतिहासिक परिप्रेक्षय मे देखा जाये तो राजस्थान राजपूतने की आमेर रियासत के शाशक भारमल ने सबसे पहले मुग़लों की अधीनता स्वीकार की थी तथा अपनी पुत्री हरका बाई का विवाह अकबर के साथ करवाया था। 6 फरवरी 1562 में। तथा जहांगीर इनका पुत्र था जिसे सलीम के नाम से भी जाना जाता है। 1556 ई. में 14 साल की आयु में जब अकबर आगरा के तख्त पर बैठा तब राजपूताना में 11 राज्य थे– मेवाड़, आम्बेर, मारवाड़, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही, अजमेर, बूंदी, बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं करौली। आगरा के तख्त पर बैठते ही अकबर को मुस्लिम गवर्नरों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। जनवरी 1562 में आमेर के राजा भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली तथा अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

दिया। उसी साल अकबर ने मेड़ता को अपने अधीन किया। ई.1567 में अकबर ने चित्तौड़ को अपने अधीन किया। ई.1569 में अकबर ने रणथंभौर पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया। ई.1570 में उसने नागौर की यात्रा की। मारवाड़ के शासक मालदेव के पुत्र चंद्रसेन, बीकानेर के राय कल्याणमल और उसके पुत्र रायसिंह तथा जैसलमेर के रावल हरराय ने नागौर में उपस्थित होकर अकबर की अधीनता स्वीकार की। अकबर ने बीकानेर तथा जैसलमेर की राजकुमारियों से विवाह किये। इस प्रकार 1570 ई. तक मेवाड़ तथा मेवाड़ के अधीनस्थ राज्य डूंगरपुर और बांसवाड़ा को छोड़कर लगभग पूरा राजपूताना अकबर के अधीन हो गया। अकबर ने राजपूत राजाओं को वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा अपने अधीन करने अथवा युद्ध में हराने के पश्चात भी उनसे कठोर व्यवहार न करके मैत्री कर ली। उसने ई. 1563 में हिन्दुओं पर से तीर्थयात्री कर हटा दिया तथा ई. 1564 से जजिया कर बंद कर दिया जो कि समस्त गैर मुसलमानों को देना पड़ता था। इस प्रकार अकबर ने अपने शासन में समन्वयकारी संस्कृति अपनाई। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू शासकों ने उसे अपना सम्राट स्वीकार कर लिया और मुगल शासन मजबूत हो गया। उसने समन्वयकारी नीति के तहत दीने इलाही नामक नया धर्म चलाना चाहा किंतु उसे हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों ने ही स्वीकार नहीं किया। अकबर ने अजमेर को राजपूताना की केंद्रीय राजधानी बनाया गया जहाँ मुस्लिम गवर्नर बैठने लगा। उस काल में मेवाड़ (उदयपुर), मारवाड़ (जोधपुर) तथा आम्बेर (जयपुर) तीन बड़े राज्य थे। राजपूताना की अन्य रियासतों के संस्थापकों में से अधिकतर शासक इन्हीं तीन बड़े राज्यों के शासकों के वंशज थे। इनमें से मेवाड़ हर तरह से अन्य समस्त राज्यों में उच्च स्थान रखता था। जहाँगीर के समय मेवाड़ को मुगलों से संधि करनी पड़ी जो औरंगजेब के समय में भंग हो गयी।

मुग़लों से राजस्थान मे हुये प्रमुख युद्ध :

सिकंदर लोदी के बाद ई.1517 में इब्राहीम लोदी दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इब्राहीम लोदी ने सांगा पर भयानक आक्रमण किया। खातौली के मैदान में दोनों सेनाओं में भयानक युद्ध हुआ जिसमें सांगा का बायां हाथ कट गया और घुटने पर तीर लगने से वह सदा के लिये लंगड़ा हो गया। इस पर भी सांगा ने हिम्मत नहीं हारी। उसने इब्राहीम लोदी में कसकर मार लगायी और हजारों मुस्लिम सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। लोदी की सेना परास्त होकर भाग गई। जब बाबर ने भारत पर आक्रमण किया तब मेवाड़ पर राणा शाखा के वंशज महाराणा सांगा का शासन था। उसकी राजधानी चित्तौड़ थी। वह मेवाड़ के महाराणाओं में सबसे प्रतापी राजा था। जिस समय सांगा गद्दी पर बैठा, उस समय दिल्ली पर लोदी वंश का सुल्तान सिकंदर लोदी, गुजरात पर महमूद शाह बेगड़ा और मालवा में नासिरशाह खिलजी शासन कर रहा था।

राजस्थान प्रान्त की तत्कालीन समस्त रियासतों में मेवाड़ भी एक रियासत थी। इस पर गुहिल वंश का शासन था जिसे सीसोदिया वंश भी कहा जाता है। महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी अमर सिंह प्रथम ने सबसे पहले मुग़लों की अधीनता स्वीकार की। यह सीसोदिया वंश के प्रथम शासक थे। जहांगीर के साथ इनहोने संधि की थी जिसे प्रथम मेवाड़ मुग़ल संधि कहा जाता है यह संधि 5 फरवरी 1615 को यह संधि हुई। इस संधि की प्रमुख बाते निम्न थी–

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

- मेवाड़ का महाराणा मुग़ल के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करेगा
- मेवाड़ का महाराणा मुग़ल दरबार मे कभी उपस्थित नहीं होगा बल्कि युवराज उपस्थित हो सकता है।

मेवाड़ एक मात्र ऐसी रियासत थी जिसने अकबर के जीवनकाल में मुगलों की अधिनता को स्वीकार नही किया था। अकबर ने राजपूत शासकों को अपने दरबार में उच्च पद एवं बड़े प्रान्तों की सूबेदारी प्रदान की थी। 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के बाद शहजादा सलीम जहॉगीर के नाम से मुगल बादशाह बना। जहॉगीर कालीन राजपूत नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि 1615 ई. में मुगल–मेवाड़ सन्धि के द्वारा मेवाड़ का मुगलों की अधीनता को स्वीकार करना था। जहॉगीर का विवाह भी दो राजपूत राजकुमारियों के साथ हुआ – आमेर की मानबाई तथा मारवाड़ की भानुमति (जगत गुसाई) के साथ। जहॉगीर स्वंय जोधाबाई का पुत्र था। जहॉगीर ने अपनी माता को मरियम उस जमानी की उपाधि दी। जहॉगीर ने जोधपुर के महाराजा सूरसिंह को सवाई राजा की उपाधि दी थी जहॉगीर के आमेर के महाराजा मानसिंह के साथ व्यक्तिगत सम्बंध अच्छे नही थे।

निष्कर्ष :

इतिहास मे मुग़ल साम्राज्य को एक लंबे समय तक चलने वाले एवं विशाल साम्राज्य के रूप मे देखा जाता है। वही राजस्थान का क्षेत्र जिसकी तत्कालीन समस्त रियासते राजपूताने से संबन्धित थी, एवं मुग़ल राजाओं की यह प्रारम्भ से ही दृढ़ इच्छा शक्ति रही की इस गौरवशाली क्षेत्र पर किसी भी तरह से आधिपत्य किया जाये। परंतु उचित समय नहीं मिलने के कारण यह संभव नही हो पा रहा था। जब अकबर ने सिंहासन ग्रहण किया तो उन्होंने राजपूतों को उनके पक्ष में जीतने के लिए जानबूझकर प्रयास किया और भारत में मुगल शासन के विस्तार और एकीकरण में अपना समर्थन लिया। वह अपने प्रयास में जबरदस्त सफलता के साथ मुलाकात की। इससे राजपूतों के विद्रोहों की संख्या और परिमाण में गिरावट आई है। अकबर अपने प्रशासनिक और अन्य सुधारों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकता था। इस प्रकार अकबर का शासन मुगलों और राजपूतों के मित्रवत संबंधों की शुरुआत को चिह्नित करता है। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग के बीच धार्मिक संघर्ष के संबंध को सहयोग और मित्रता के द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अग्रवाल वासुदेव शरण : मुगल इंडिया, नई दिल्ली , 1969
2. अग्रवाल वासुदेव शरण : मुगल आर्ट एंड कल्चर, इलाहाबाद,1976
3. अग्रवाल सरला : मुगल आर्ट फिलॉसफी, कामेश्वर प्रकाशन, बीकानेर , 1999
4. प्रो. आचार्य पी.के. : ए डिक्शनरी ऑफ हिंदू आर्किटेक्चर, वाराणसी
5. रिचमंड ई.टी. : मुस्लिम आर्किटेक्चर, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, 1926
6. शर्मा कालूराम : मध्यकालीन भारत का इतिहास, 2000
7. उपाध्याय भगवतीशरण : भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका, नई दिल्ली,1991
8. उपाध्याय भगवतीशरण : मुगल काल का सांस्कृतिक इतिहास,लखनऊ , 1972
9. क्यू एचीसन ; संधियों का एक संग्रह, सगाई और रविवार, खंड –2, 1932
10. मिश्र जयशंकर : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी ,पटना, 2002
11. दामोदर धर्मानंद कोसांबी : प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता,राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002
12. थापर रोमिला : भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

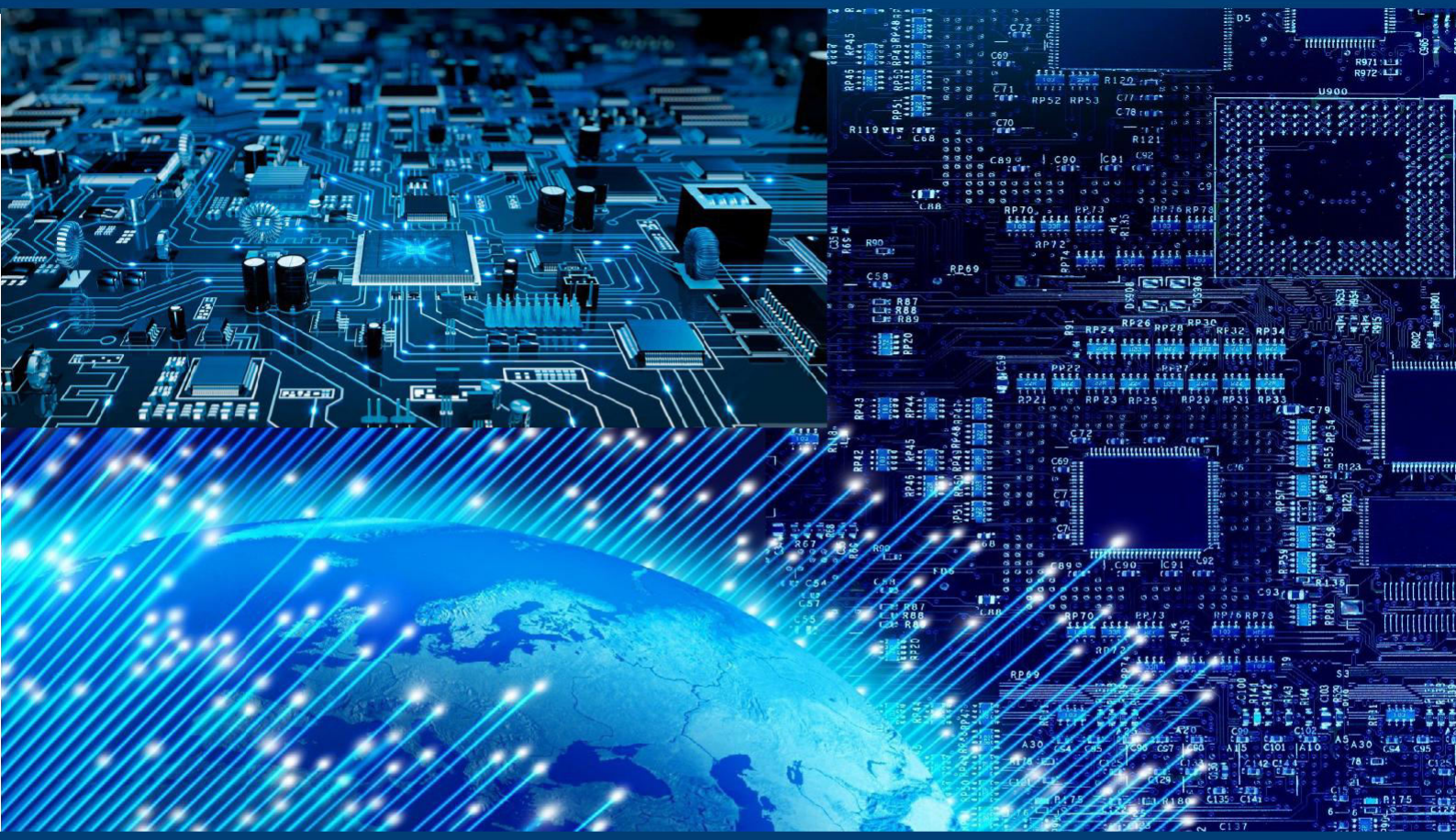

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |